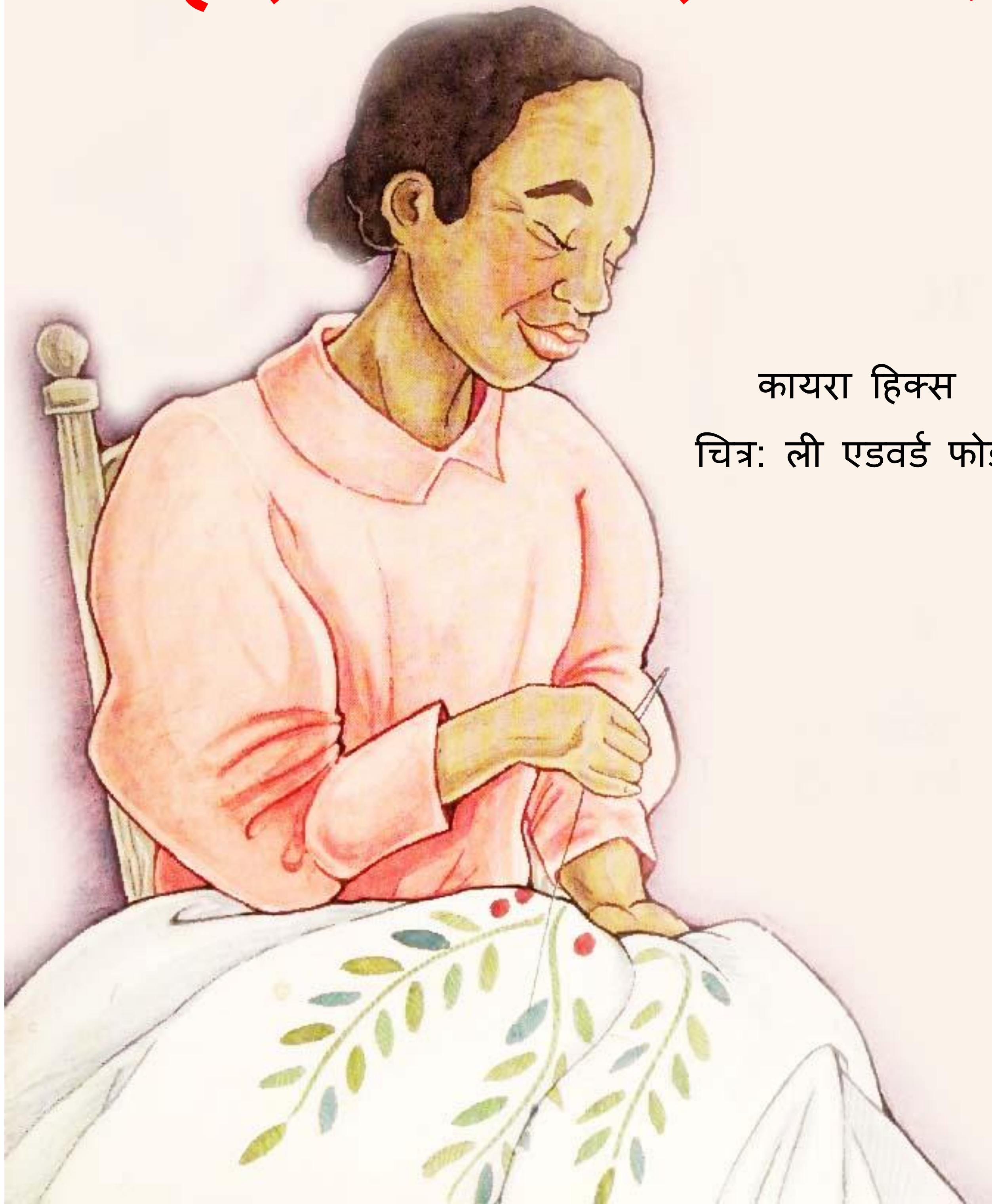
मार्था ऐन की रज़ाई

महारानी विक्टोरिया के लिए



कायरा हिक्स

चित्र: ली एडवर्ड फोडी

मार्था ऐन की रज़ाई
महारानी विक्टोरिया के लिए



कायरा हिक्स
चित्र: ली एडवर्ड फोडी

मार्था ऐन को घर का एक कार्य बहुत अच्छा लगता था. यह कार्य था अपने पापा के पैसे एक पुराने टीन के लाल डिब्बे में रखना. मार्था ऐन एक दास थी. उसके पिता, जॉर्ज अर्सकिन, स्वतंत्र व्यक्ति थे और भ्रमणशील प्रचारक थे. हर रविवार के दिन, प्रवचन के बाद, परिवार को गुलामी से मुक्त करने के लिए प्रवचन सुनने आए लोगों से पैसे इकट्ठे किए जाते थे. जब पापा घर आते तब माँ पैसे गिनती और मार्था ऐन उन पैसों को टीन के लाल डिब्बे डाल देती.

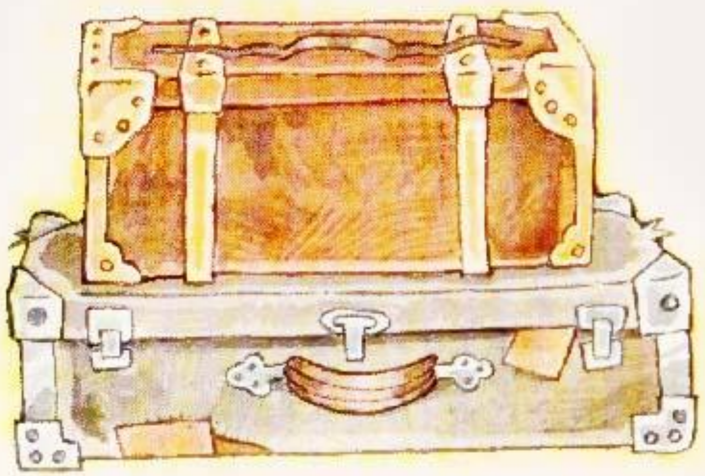


मार्था ऐन का जन्म 1817 में, पूर्व टैनेसी में स्थित डोहार्टी बागान में हुआ था. प्रथा के अनुसार एक दास बिना किसी वेतन के, दिन में कई घंटे लगातार काम करता था. दासों के बच्चों को स्कूल जाने की अनुमति नहीं थी.



मार्था ऐन के दो भाई, वैलेस और वियर, भी खेतों में काम करते थे. उसकी बड़ी बहनें, जेन और मैरी, घर के कार्यों में माँ की सहायता करती थीं. मार्था ऐन अपने छोटे भाई हॉपकिंस और छोटी बहन, सारा की देखभाल करने में दादी की मदद करती थी.

एक रविवार के दिन उसके पिता बड़े उत्साह के साथ घर लौटे क्योंकि उन्हें एक ऐसी संस्था के बारे में पता लगा था जो अश्वेत लोगों को अफ्रीका में स्थित लाइबेरिया में अपना नया जीवन शुरु करने में मदद करती थी.

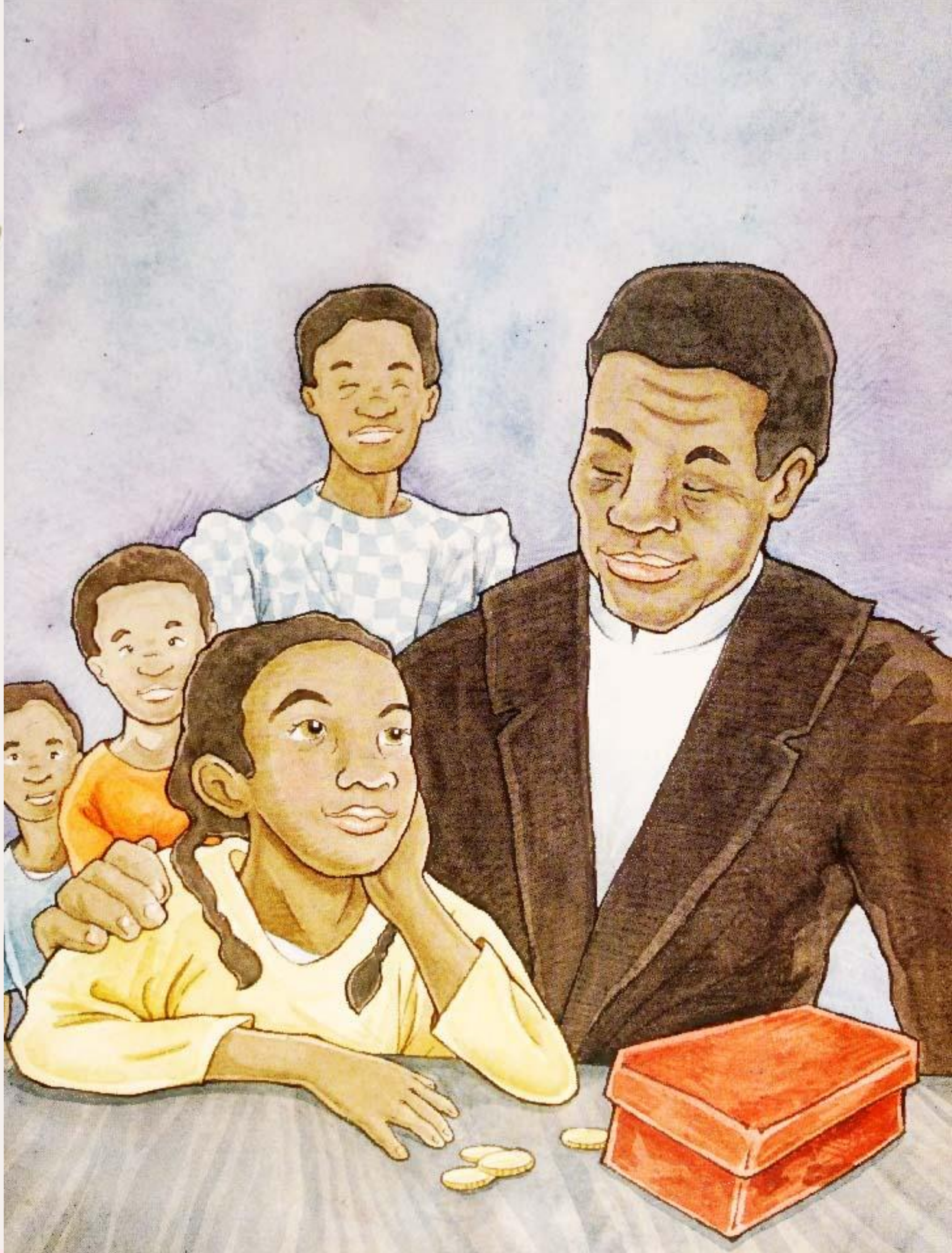


"लाइबेरिया में सब बच्चे स्कूल जाते हैं," पापा ने परिवार को बताया.

"क्या मैं भी स्कूल जाकर पढ़ना-लिखना सीख पाऊँगी?" मार्था ऐन ने पूछा.

"हाँ, तुम भी स्कूल जा पाओगी," पापा ने कहा, "हमें तुम पर गर्व होगा."

अब मार्था ऐन बड़ी उतावली के साथ टीन के पुराने लाल डिब्बे में पैसों में वृद्धि की प्रतीक्षा करने लगी.



मार्था ऐन की आयु बारह वर्ष की थी जब पापा ने परिवार की स्वतंत्रता खरीदने के लिए 2400 डॉलर आखिरकार इकट्ठे कर ही लिए.

"हम लाइबेरीया जा रहे हैं!" पापा ने ऊँची आवाज़ में कहा.

मार्था ऐन खुशी से नाचने लगी.

"मैं स्कूल जाऊँगी!"





मार्था ऐन और उसका परिवार 1830 में लाइबेरिया की ओर जाने वाले समुद्री जहाज़ में सवार हो गए. अमरीकन क्लोनाइज़ेशन संस्था ने उन्हें लाइबेरिया में ज़मीन दी, जिस पर उन्होंने अपना घर बनाया और खेती करने लगे.

लाइबेरिया में सब बच्चे स्कूल जा सकते थे. जीवन में पहली बार मार्था ऐन एक स्कूल गई और बड़ी व्यग्रता से पढ़ाई करने लगी.

घर पर उसकी माँ उसे और उसकी बहनों को कपड़ा काटना और उसकी सिलाई करना सिखाने लगी. मां ने लड़कियों को कपड़े सिलना और रज़ाई की कढ़ाई करना भी सिखाया.

"माँ, एक दिन मैं भी आपकी तरह कपड़ों की सिलाई करने में माहिर हो जाऊँगी!" मार्था ऐन ने घोषणा की.

"हाँ, तुम अवश्य माहिर हो जाओगी," माँ ने कहा, "हमें तुम पर गर्व होगा."

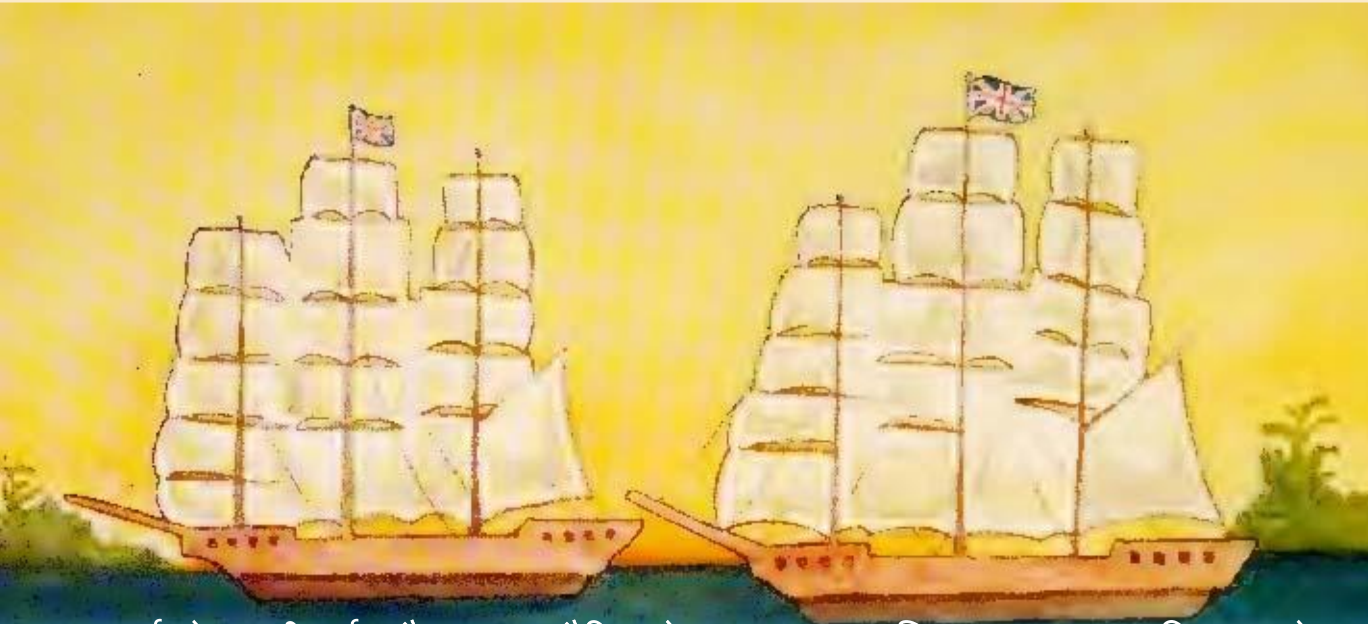




लेकिन जल्दी ही दुर्दिन आ गए. सारे नगर में अफ्रीकन बुखार फैल गया. इस बुखार से मार्था ऐन के पिता, माँ और बहनों की मृत्यु हो गई. दादी और वियर भी चल बसे. मार्था ऐन कई दिनों तक रोती रही क्योंकि उन सबकी कमी उससे सही न जा रही थी. सबसे बड़े भाई वैलेस ने मार्था ऐन और हॉपकिंस को अपनी बाहों में भर लिया.

"क्या तुम अमरीका वापस जाना चाहती हो?" वैलेस ने पूछा.

"नहीं," उसने कांपते हुए कहा. "मैं यहीं रहना चाहती हूँ. मैं स्कूल जाना चाहती हूँ, मैं चाहती हूँ कि माँ और पापा मुझ पर गर्व करें."



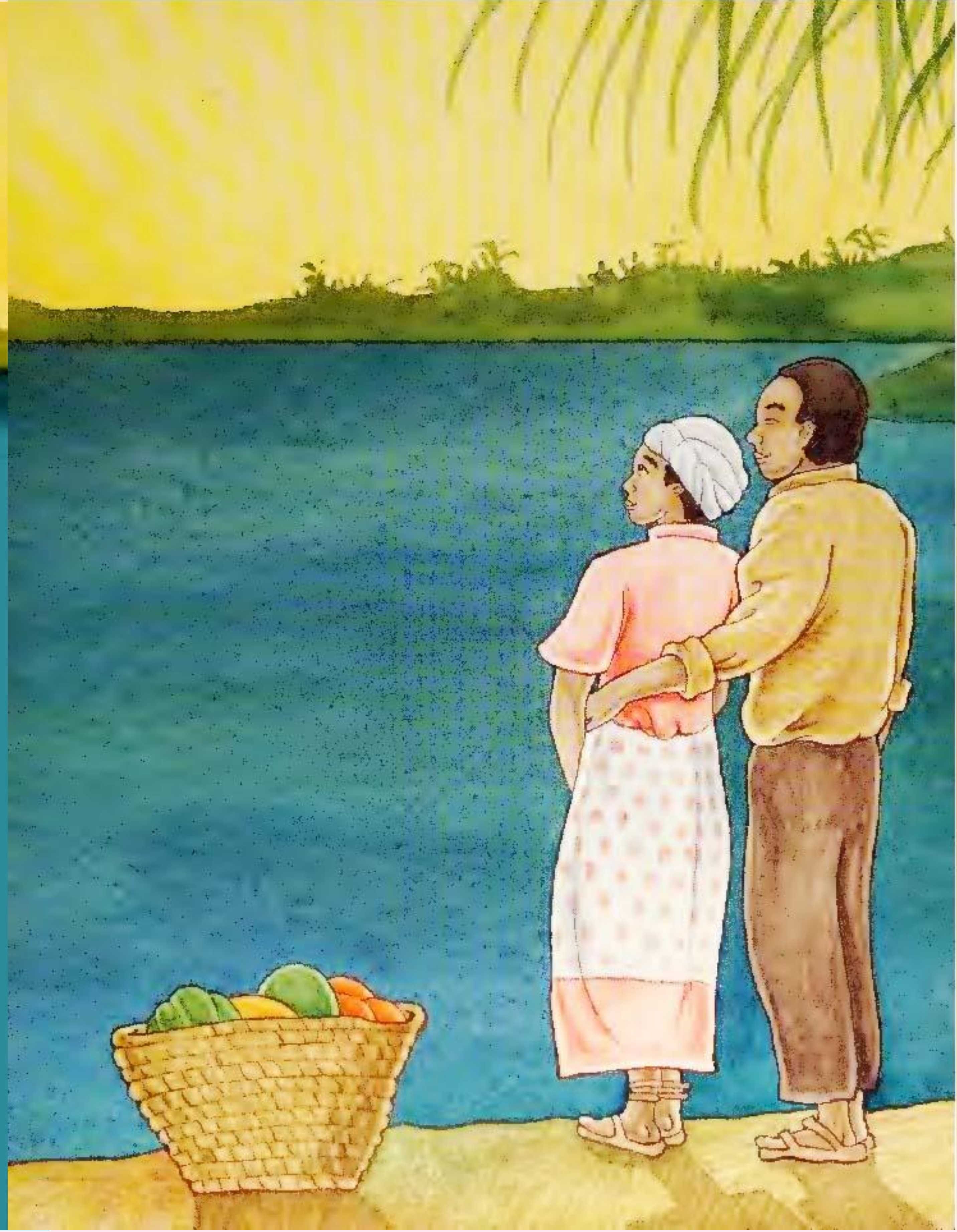
मार्था ऐन बड़ी हुई और सायन हैरिस के साथ उसका विवाह हुआ. एक दिन उसने एक समाचार पत्र, लाइबेरियन हैराल्ड, में इंग्लैंड का नई रानी विक्टोरिया के विषय में समाचार पढ़ा. मार्था ऐन को लगा कि रानी बहुत आकर्षक दिख रही थी.

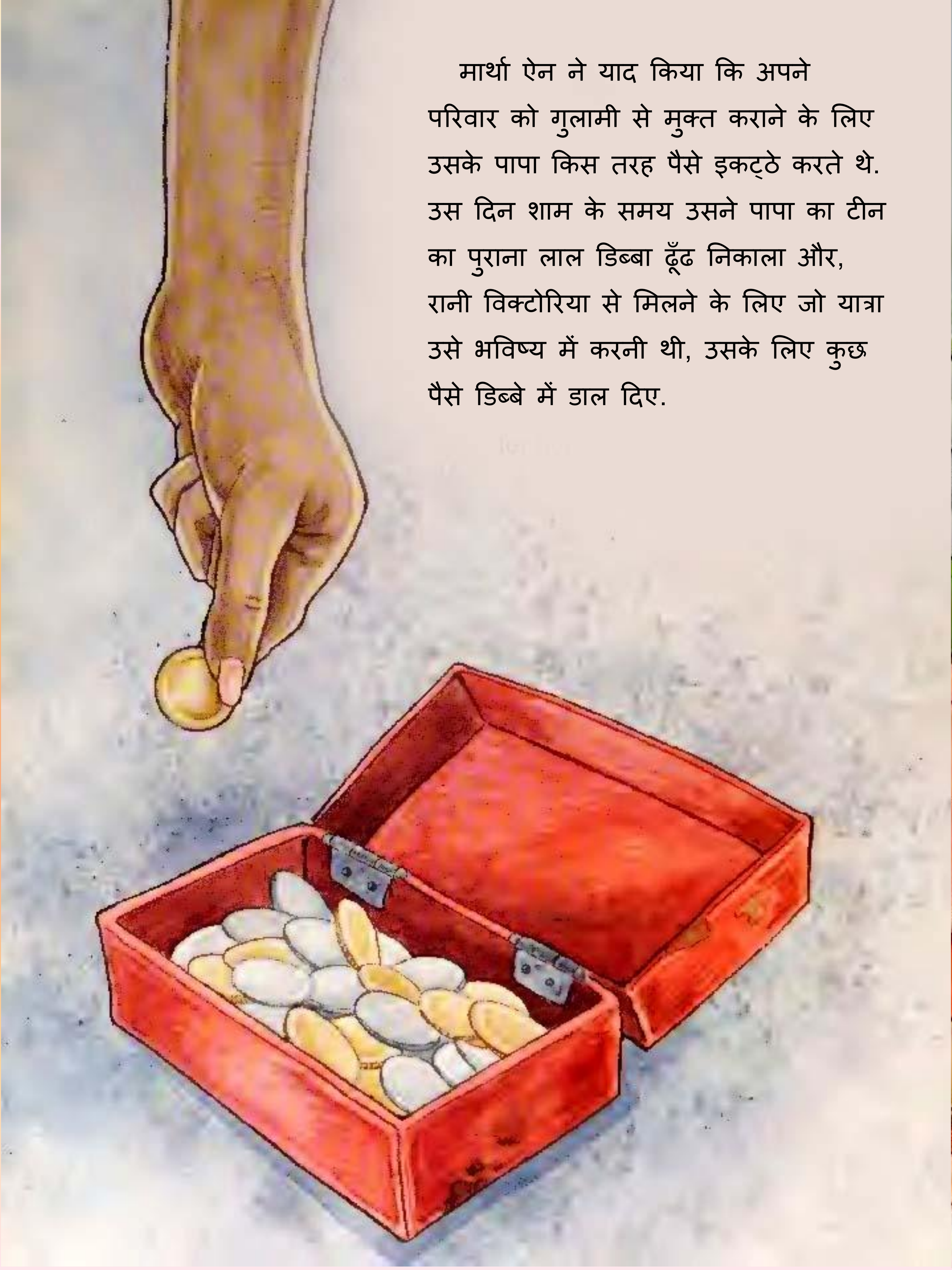
मार्था ऐन हर सप्ताह पैदल चल कर सायन के साथ मार्किट जाती थी. वह उन ब्रिटिश जहाज़ों को देखती थी जो लाइबेरिया के समुद्री तट की निगरानी करते थे और उन लोगों को रोकते थे जो अफ्रीका के अश्वेत लोगों को पकड़ कर कैद कर लेते थे और उन्हें दास बना कर बेचते थे. मार्था ऐन फिर से दास बन कर, बिना वेतन के, घंटों काम नहीं करना चाहती थी. उसके मन में रानी विक्टोरिया के लिए बहुत श्रद्धा थी क्योंकि रानी ने नौसेना भेजकर, उसे और अन्य कई लोगों को दास बनने से बचाया था.

“सायन, मैं जानती हूँ कि मैं माँ और पापा को कैसे गौरवान्वित कर सकती हूँ?” उसने कहा. “रानी विक्टोरिया हम लोगों की सच्ची मित्र हैं. वह दयालु हैं और हमारी रक्षा कर रही हैं इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद कहना चाहती हूँ. मैं स्वयं उनसे मिलकर उन्हें धन्यवाद कहूँगी.”

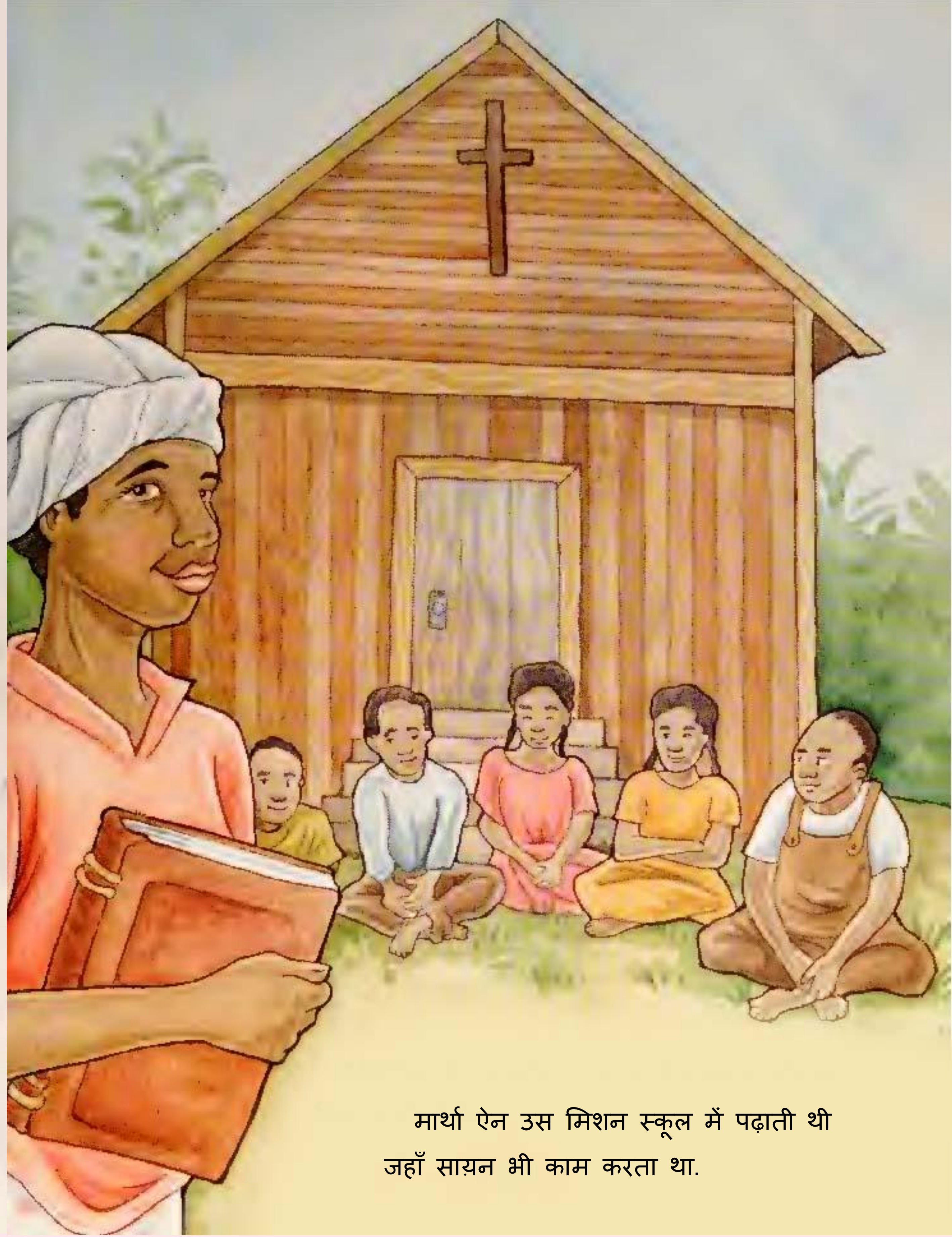
“उनसे मिलकर?” सायन ने आश्चर्य से पूछा. “इंग्लैंड यहाँ से 3500 मील दूर है. तुम वहाँ कैसे पहुँचोगी और रानी से कैसे मिलोगी?”

“मैं कोई न कोई उपाय कर लूँगी,” उसने विश्वास के साथ कहा.

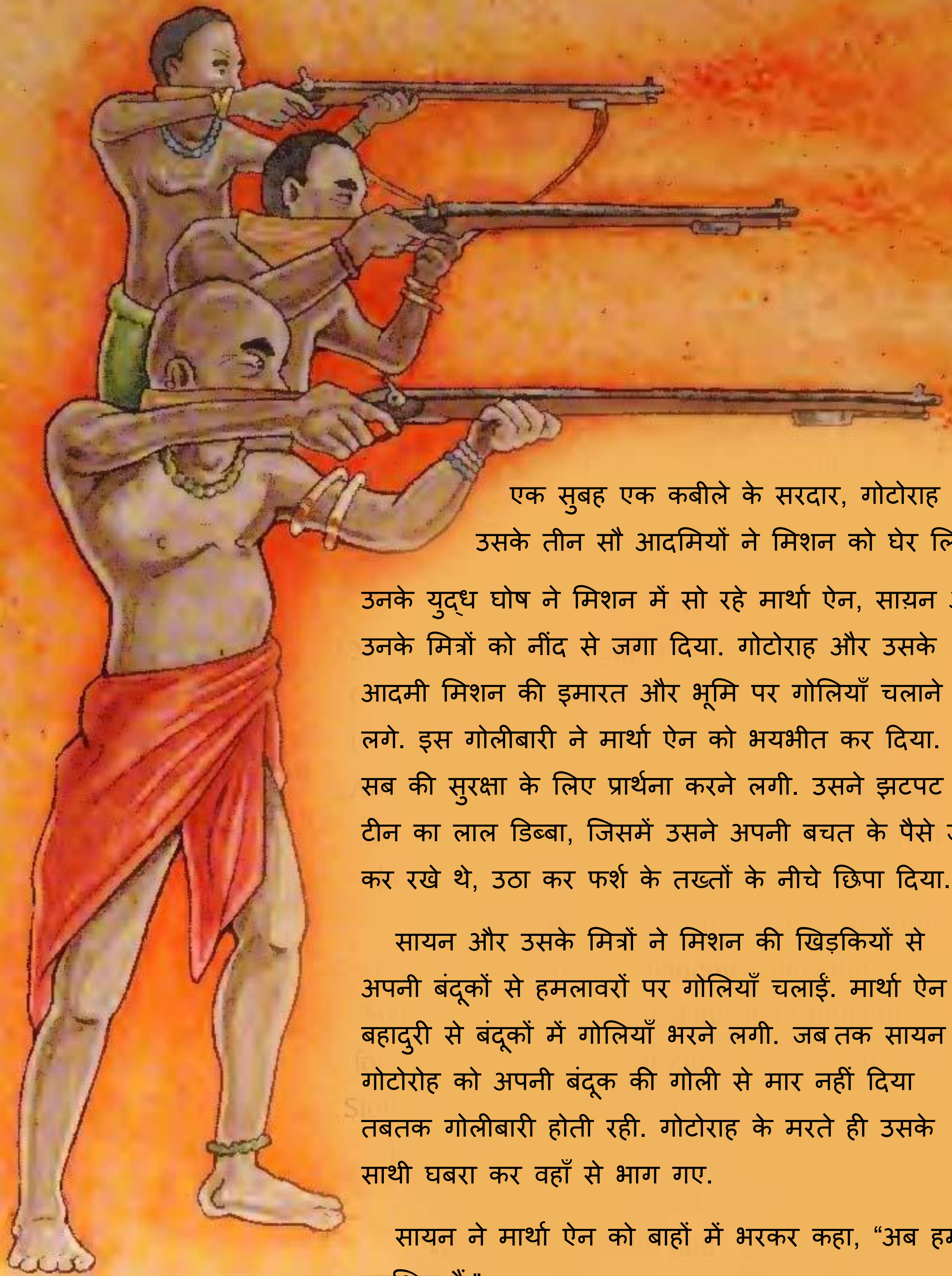




मार्था ऐन ने याद किया कि अपने परिवार को गुलामी से मुक्त कराने के लिए उसके पापा किस तरह पैसे इकट्ठे करते थे. उस दिन शाम के समय उसने पापा का टीन का पुराना लाल डिब्बा ढूँढ निकाला और, रानी विक्टोरिया से मिलने के लिए जो यात्रा उसे भविष्य में करनी थी, उसके लिए कुछ पैसे डिब्बे में डाल दिए.



मार्था ऐन उस मिशन स्कूल में पढ़ाती थी जहाँ साय़न भी काम करता था.



एक सुबह एक कबीले के सरदार, गोटोराह और उसके तीन सौ आदमियों ने मिशन को घेर लिया.

उनके युद्ध घोष ने मिशन में सो रहे मार्था ऐन, साय़न और उनके मित्रों को नींद से जगा दिया. गोटोराह और उसके आदमी मिशन की इमारत और भूमि पर गोलियाँ चलाने लगे. इस गोलीबारी ने मार्था ऐन को भयभीत कर दिया. वह सब की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करने लगी. उसने झटपट टीन का लाल डिब्बा, जिसमें उसने अपनी बचत के पैसे जमा कर रखे थे, उठा कर फर्श के तख्तों के नीचे छिपा दिया.

सायन और उसके मित्रों ने मिशन की खिड़कियों से अपनी बंदूकों से हमलावरों पर गोलियाँ चलाईं. मार्था ऐन बहादुरी से बंदूकों में गोलियाँ भरने लगी. जब तक सायन ने गोटोरोह को अपनी बंदूक की गोली से मार नहीं दिया तबतक गोलीबारी होती रही. गोटोराह के मरते ही उसके साथी घबरा कर वहाँ से भाग गए.

सायन ने मार्था ऐन को बाहों में भरकर कहा, “अब हम सुरक्षित हैं.”







मार्था ऐन और सायन मिशन छोड़ कर अपने फार्म पर आकर रहने लगे. वह बाज़ार में अपनी सब्ज़ियाँ बेचते थे. मार्था ऐन बचे हुए सिक्के टीन के लाल डिब्बे में डालती रहती थी.

जब सायन के अचानक मृत्यु हो गई तो मार्था ऐन बहुत रोयी. वह कई वर्ष अकेली रही. फिर उसकी भेंट हैनरी रिक्स के साथ हुई जो एक विधुर था. उसके तीन बेटे भी थे. उसने हैनरी के साथ विवाह कर लिये. हैनरी का फार्म क्ले-ऐशलैंड नगर में था जहाँ वह कॉफी, अदरक और कपास की खेती करता था.

मार्था ऐन हैनरी की कपास से कपड़ा बुनती थी. परिवार और अपनी आय बढ़ाने के लिए वह कपड़े भी सिलती थी. सिलाई-कढ़ाई के काम में वह अपनी माँ की तरह निपुण हो गई थी. मार्था ऐन अपने टीन के लाल डिब्बे में बचे हुए सिक्के डालती रही.



"मार्था ऐन, जब तुम रानी विक्टोरिया से मिलोगी," हैनरी ने मज़ाक में हँसते हुए कहा, "तो रानी को देने के लिए तुम्हारे पास कोई उपहार भी नहीं है?"

हैनरी का मज़ाक मार्था ऐन को चुभ गया. हैनरी मार्था ऐन को प्यार करता था परंतु वह कल्पना भी न कर सकता था कि मार्था ऐन कभी रानी विक्टोरिया को मिल पाएगी.

"हैनरी, रानी विक्टोरिया की दयालुता के लिए मैं उनका सम्मान करती हूँ. तुम देख लेना," मार्था ऐन ने दृढ़ता के साथ कहा, "उनको धन्यवाद कहने के लिए मैं एक दिन उनसे अवश्य मिलूँगी और उन्हें देने के लिए मेरे पास एक उपहार भी होगा."





रानी के लिए एक उपयुक्त उपहार के बारे में सोचने में मार्था ऐन ने कई सप्ताह बिता दिए. उसने तय किया कि वह एक सुंदर रज़ाई सिलेगी जैसा उसकी माँ ने उसे सिखाया था. उसने अपने फार्म को देखा और रज़ाई पर डिज़ाइन बनाने के लिए हैनरी का कॉफी का एक पौधा चुना. अब हर रात वह कपड़े के टुकड़ों को सिल कर रज़ाई बनाने लगी.



रानी विक्टोरिया से मिलने के मार्था ऐन के सपने के बारे में और जो रज़ाई वह बुन रही थी उसके बारे में नगर के सब लोग जानते थे. रस्सी टापते हे बच्चे उसे चिढ़ाने के लिए गाते:

आंटी मार्था जाकर मिलेगी रानी से

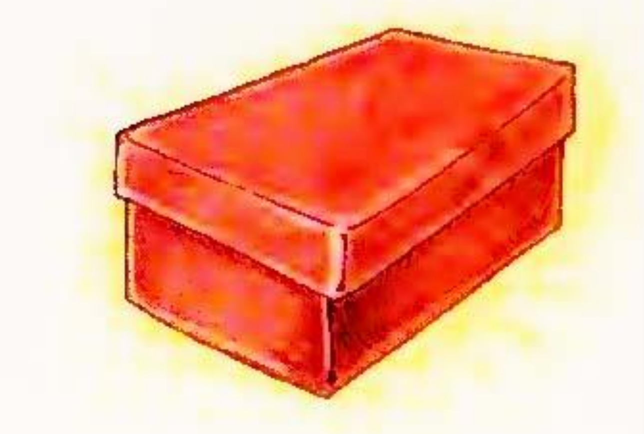
बुन रही है रज़ाई पर बीज कॉफी के

पर कितने बीज पड़ेंगे बुनने?

दो-चार-आठ-दस-हे-हे-हे!

कई वर्ष बीत गए. हैनरी बूढ़ा हो गया और एक दिन चल बसा. मार्था ऐन स्वयं भी बूढ़ी हो गई थी. लेकिन माँ और पापा को गौरवान्वित करने के अपने निश्चय पर दृढ़ थी. मार्था ऐन ने पापा के पुराने लाल टीन के डिब्बे में जमा किए पैसे गिने. “हे भगवान!” वह खुशी से चिल्लाई. आखिरकार उसके पास इंग्लैंड की यात्रा करने के लिए पर्याप्त पैसे जमा हो गए थे.

“लेकिन मैं रानी से कैसे मिल पाऊँगी?” उसने अपने आप से पूछा.



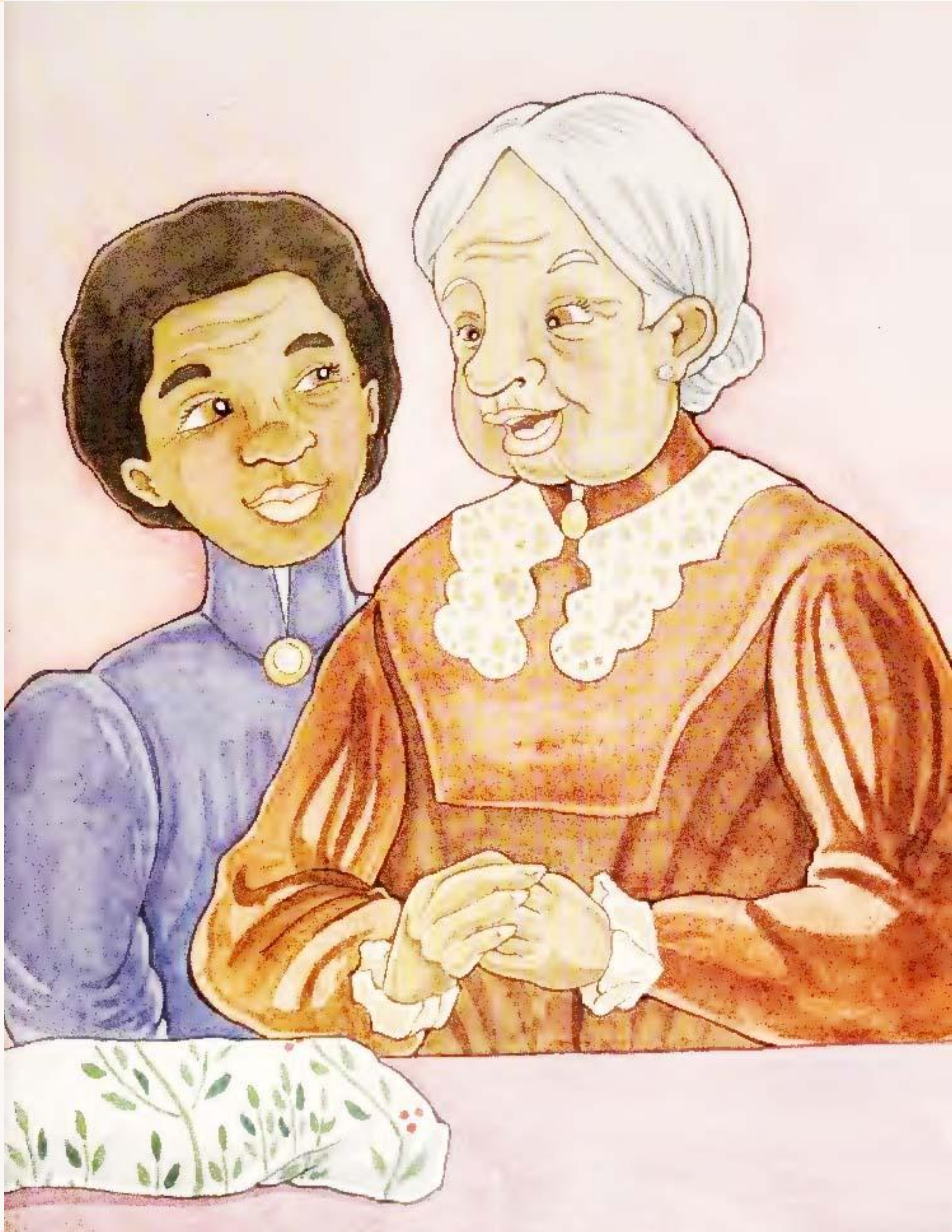
एक दिन एक अप्रत्याशित अतिथि मार्था ऐन से मिलने आई- वह थी मिसेज़ जैन रॉबर्ट्स, वह लाइबेरिया के प्रथम राष्ट्रपति जोसफ रॉबर्ट्स की पत्नी थी.

“मैंने सुना है कि तुम रानी विक्टोरिया के लिए एक अद्‌भुत रज़ाई बना रही हो. क्या मैं वह रज़ाई देख सकती हूँ?” मिसेज़ रॉबर्ट्स ने पूछा.

मार्था ऐन ने रज़ाई खोल कर दिखाई. उस पर कपड़े की बनी सैंकड़ों हरी पत्तियाँ और दर्जनों कॉफी के लाल बीज सिले हुए थे.

“यह तो उत्कृष्ट है!” मिसेज़ रॉबर्ट्स ने कहा. “रानी विक्टोरिया से मिलने में मैं तुम्हारी सहायता करूँगी.”

मिसेज़ रॉबर्ट्स ने लंदन स्थित लाइबेरिया के राजदूत, डाक्टर ऐडवर्ड्स ब्लाइडन को पत्र लिखा और कहा कि रानी विक्टोरिया से भेंट कराने में मार्था ऐन की सहायता करें. डाक्टर ब्लाइडन ने तुरंत उत्तर दिया.





वर्षों तक मार्था ऐन का मज़ाक उड़ाने और चिढ़ाने वाले नगरवासी सब आश्चर्य से देखते रह गए जब 76 साल की मार्था ऐन, अपनी रज़ाई पकड़े, इंग्लैंड जाने वाले जहाज़ पर सवार हुई.

डाक्टर ब्लाइडन ने रानी को पत्र लिख कर निवेदन किया कि वह मार्था ऐन को भेंट करने का अवसर दें. लंडन टाइम्स ने एक लेख में लिखा कि किस प्रकार मार्था ऐन, रानी से मिलने के लिए, पचास वर्षों से थोड़े-थोड़े पैसे बचा कर जमा कर रही थी. लेख पढ़ कर इंग्लैंड के लोगों ने मार्था ऐन के समर्थन में आवाज़ उठाई. शीघ्र ही एक टेलीग्राम आया.

“रानी विक्टोरिया का आदेश,

मिसेज़ मार्था ऐन रिक्स और अन्य मेहमानों को स्वागत-समारोह में भाग लेने के लिए 16 जुलाई 1892 के दिन विंडसर कैस्ल आमंत्रित किया जाता है.”





जिस दिन का मार्था ऐन वर्षों से सपना देख रही थी वह दिन आ गया था. वह उत्सुकता से एक विशाल कमरे में प्रतीक्षा कर रही थी कि एक दरवाज़ा खुल गया. विक्टोरिया, ब्रिटेन की रानी और भारत की महारानी ने प्रवेश किया.



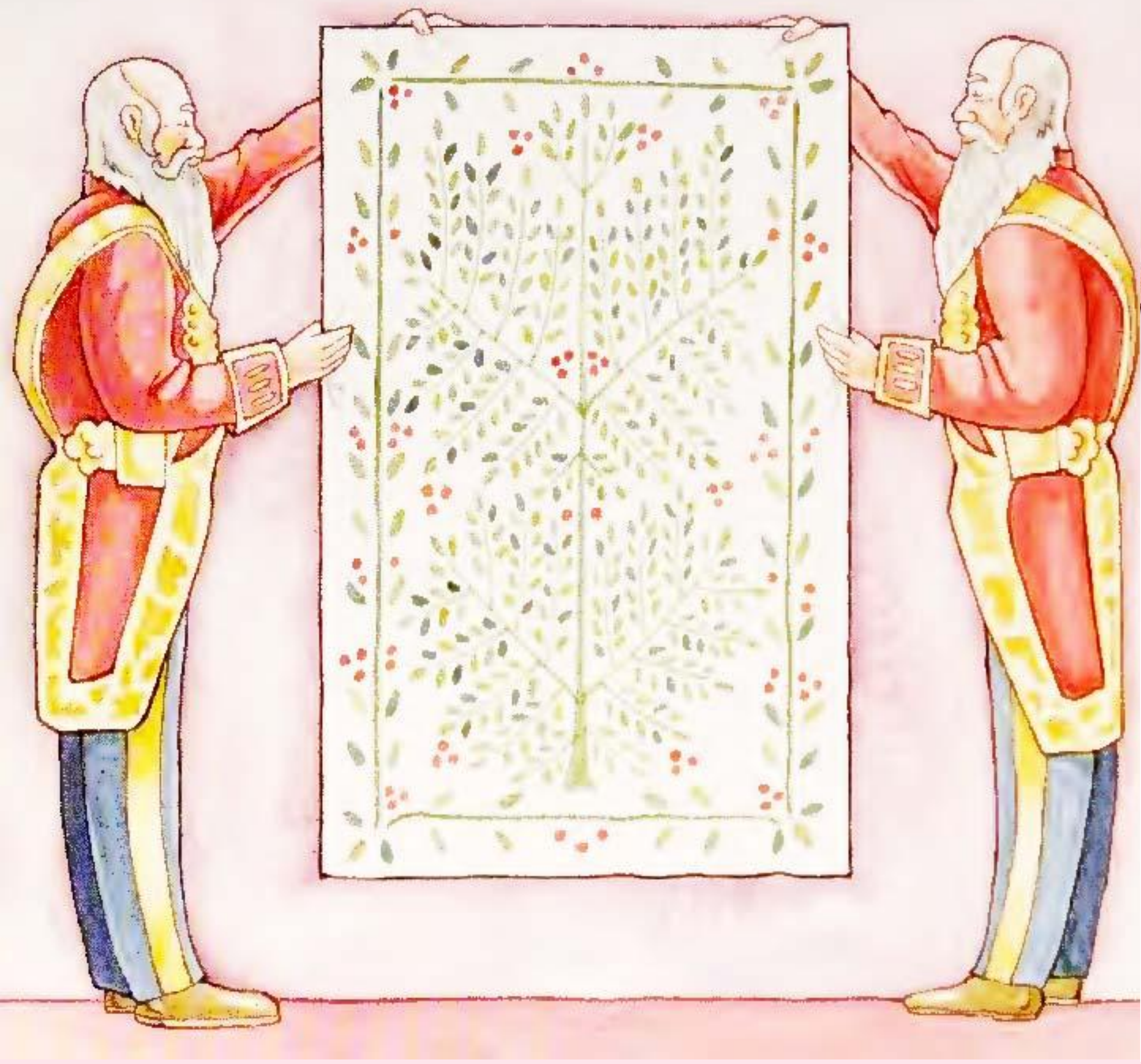
मार्था ऐन यह देख कर आश्चर्यचकित हो गई कि उनके पीछे राजकुमार एडवर्ड भी अपने परिवार संग भीतर आया.

मार्था ऐन ने झुककर रानी का अभिवादन किया और रानी के साथ हाथ मिलाया.

"महामहिम, आप लाइबेरिया के लोगों की विशेष मित्र हैं," मार्था ऐन ने कहा. "मेरे पास कोई मूल्यवान उपहार नहीं है पर मुझे आशा है कि आप को मेरी भेंट अच्छी लगेगी." दो सेवकों ने कॉफी के पेड़ों वाली रज़ाई खोली.

"यह तो बहुत सुंदर है!" रानी विक्टोरिया ने कहा.

"बहुत ही अद्भुत कृति है," राजकुमार ऐडवर्ड ने सहमति जताई.





"अमरीका में अपने गुलामी के जीवन के बारे में मुझे बताओ और लाइबेरिया में अपने स्वतंत्र जीवन के बारे में भी." रानी ने कहा. दोनों औरतें देर कर आपस में बातें करती रहीं. फिर शाही परिवार के लौटने का समय हो गया.

"तुम्हारी सुंदर रज़ाई के लिए धन्यवाद," रानी विक्टोरिया ने कहा. "सिलाई-कढ़ाई के काम में तुम बहुत ही माहिर हो."



जब मार्था ऐन लौट कर लाइबेरिया आई तो वहाँ के लोगों ने तालियाँ बजाकर और झंडियाँ लहरा कर उसका स्वागत किया. एक बैंड ने स्वागत धुन बजाई. जो लोग उसका मज़ाक उड़ाया करते थे आज वही उसका स्वागत कर रहे थे.



मार्था ऐन अपनी यात्रा से बहुत प्रसन्न थी. अपना पापा के टीन के लाल डिब्बे के पास उसने वह उपहार रखे जो रानी ने उसे दिए थे.

"पापा, माँ, मुझे आशा है कि आप मुझ पर गर्व कर रहे हैं." उसने धीमी आवाज़ में कहा.



लेखक का नोट

रानी विक्टोरिया का लिए बनाई, मार्था ऐन की कॉफी के पेड़ों वाली रज़ाई को बड़ी धूमधाम के साथ अगले वर्ष शिकागो में आयोजित विश्व कोलम्बियन प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया. हर दिन हज़ारों लोग ने, उस रज़ाई को देखकर, उसकी प्रशंसा की.

मार्था ऐन और उसकी प्रिय रानी विक्टोरिया को निधन एक ही वर्ष, 1901, में हुआ.